Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मलिक राजकुमार के साहित्य में चित्रित प्रकृति

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

मलिक राजकुमार के साहित्य में चित्रित प्रकृति

Dr. Rekha Rani Zood

Assistant Professor (Hindi), Babu Anant Ram Janta College of Education, Kaul (Kaithal)

----------X----------

भूमिका :

प्रकृति मानव की चिरसहचरी है। मानव के सम्पूर्ण सुख–दुःख, आशा–निराशा, आनन्द–उल्लास आदि में प्रकृति की विशेष महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। साहित्यकार अपनी रचनाओं की प्रस्तुति में प्रकृति का सहारा लेता है। कवियों ने प्रकृति को अनेक रूपों में विश्लेषित किया है। आलंबन के रूप में तो कहीं उद्दीपन के रूप में तो कहीं आलंकारिक रूप में। अनादिकाल से ही कविगण प्रकृति–रूपसी की मनो–मोहिनी छवियों को भाव–विभोर होकर अनेक तरीकों से तराशते चले आ रहे हैं। एक ओर प्रकृति यदि रमणीय, मनोहारी एवं आकर्षक है तो दूसरी ओर वह भयावह, क्रूर एवं विस्मयकारी भी है। प्रकृति प्रेमी अपने लेखन के माध्यम से प्रकृति के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हैं।

डॉ. किरण कुमारी ने प्रकृति को पारिभाषित करते हुए कहा है–"प्रकृति या प्राकृतिक का अर्थ है– 'स्वाभाविक'। अतः प्रकृति के अन्तर्गत वही वस्तुएँ आती हैं, जिन्हें मनुष्य अपने हाथों से सजा या संवार नहीं सकता, बल्कि जो स्वयं ही अपने नैसर्गिक छटा से हमें आकर्षित करते हैं।"1

टू ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में प्रकृति को इस प्रकार पारिभाषित किया है–"जैम चीलेपबंस चवूमत बंनेपदह ंसस जीम चीमदवउमदं व िजीम उंजमतपंस ।दपउंसेए संदकेबंचम मजबण"2

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रकृति वह है जिसे मनुष्य नहीं बना सकता व जो स्वयं निर्मित एवं स्वयं चालित होती है।

प्रकृति का क्षेत्र विस्तार :

प्रकृति का क्षेत्र अति विशाल है। आकाश लोक, भू लोक एवं पाताल लोक सभी इसकी परिधि के दायरे में समा जाते हैं। दृश्यमान, अदृश्य, जड़, चेतन सभी कुछ प्रकृति में समाहित है। जगत का मूल कारण प्रकृति ही है। अतः जगत की अन्य वस्तुओं की भाँति प्रकृति भी त्रिगुणात्मिका है। सत्त्व, रज एवं तम गुणों की साम्यावस्था का नाम ही प्रकृति है। प्रकृति उत्पन्न समस्त पदार्थों में इन तीनों गुणों की सत्ता विद्यमान है।

प्रकृति चित्रण का प्रारंभ :

प्राचीन भारतीय साहित्य में सर्वप्रथम प्रकृति चित्रण ऋग्वेद में किया गया है। ऋग्वैदिक काल में ऋषियों एवं कवियों ने प्रकृति की पूजा कर उसके पल–पल बदलते रूपों का एवं प्रकृति की व्यापक शक्ति का आह्वान किया है। तत्पश्चात् सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में प्रकृति वर्णन को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला। मध्यकाल में हिन्दी साहित्य में प्रकृति चित्रण अल्प मात्रा में कियागया पर आधुनिक काल में विभिन्न कवियों ने प्रकृति का भरपूर चित्रण अपने काव्य में किया है। यदि प्रकृति के महाकवि का नाम लें तो वह नाम है–सुमित्रानन्दन पंत। इन्हें प्रकृति का लाडला भी कहा गया है।

प्रकृति के विभिन्न रूप :

आलंबन रूप में प्रकृति

उद्दीपन रूप में प्रकृति

मानवीकरण रूप में प्रकृति

अलंकार रूप में प्रकृति

संवेदनात्मक रूप में प्रकृति

प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति

रहस्यात्मक रूप में प्रकृति

वातावरण निर्माण एवं पृष्ठभूमि के रूप में प्रकृति

लोक शिक्षा रूप में प्रकृति

दूती रूप में प्रकृति।

मलिक राजकुमार के साहित्य में व्यक्त प्रकृति :

मलिक राजकुमार के साहित्य में 'प्रकृति वर्णन' अपना विशिष्ट स्थान रखता है। प्रकृति के विभिन्न आकर्षक एवं मनोहारी दृश्य आपके साहित्य का अभिन्न अंग है। आपके काव्य में प्रकृति के शान्त एवं रौद्र दोनों रूपों का बड़ा ही सहज एवं स्वाभाविक वर्णन हुआ है। आपकी कविताओं, कहानियों में यत्र–तत्र प्रकृति संबंधी वर्णन मिल जाते हैं। मलिक जी द्वारा रचित 'पैरों तले पहाड़' संस्मरण प्रकृति चित्रण से ओत–प्रोत है। मलिक राजकुमार के काव्य में प्रकृति के विभिन्न रूप देखने को मिलेंगे। यहाँ प्रकृति कहीं आलंबन रूप में कहीं उद्दीपन रूप में और कहीं मानवीकरण रूप में प्रस्तुत हुई है। कहीं प्रकृति मानव की सहचरी बन उसके सुख–दुःख की सहभागिनी बनी नजर आती है तो कहीं वह उसके प्रेरणा स्रोत बनकर उभरी है। कहीं जीवन में सरसता एवं सरलता घोलती नजर आती है तो कहीं प्रेम

www.ignited.in

जैसी सुकोमल भावना को संप्रेषित करने की माध्यम बन गई है। कवि ने प्रकृति का मानवीकरण रूप में वर्णन इस प्रकार दिया है–

"श्वेत फेनिल चुन्नी ओढ़

अपने को किनारों में समेत

उच्छवसित–सी बढ़ती है नदी।"3

"सागर सी तुम

अपनी लहरों–सी बाहें

बढ़ाओ

मुझे छू लेने को।"4

"निशा–सुंदरी की चुनरी में

चमचमाते ढेर–सारे सितारे

एक–एक कर हो रहे हें अदृश्य

काश ऐसा हो आ गिरे

कोई तारा मेरी गोद में।"5

"कमल भौचक्का खड़ा है। बरसाती नदी के उफनते यौवन का समझने का प्रयास कर रहा है। नदी अपनी सम्पर्णता के साथ किनारे ताड़ कमल के व्यक्तित्व पर छा गई है। कमल को कहना ही पड़ा –क्या हुआ टीलू.... आज बहुत प्रसन्न नजर आ रही हो।"6

दूर तक अथाह नीला शांत जल.... न तकरार की कोई पहाड़ी न शिकायतों के वृक्षों, वनस्पतियों का ठोर ठिकाना, बस संबंधों की नाव के बहने की छपाक छई और किनारों की ओर बढ़ती हल्की–फुल्की लहरें।"7

"शाम ने आँचल पसारना शुरू किया।"8

नदी के बहाव को रोकता हुआ एक बड़ा पहाड़ नदी के बीचोबीच पड़ा था। जैस घर छोड़कर समुद्र की ओर भागती नदी बहन को रोकने के लिए भाई पहाड़ ने रास्ता बंद कर दिया हो। पर जिद्द की पक्की बहन ने भाई की परवाह न करते हुए सीधे भाई के ऊपर से ही कूद लगा दी थ। नीला भाई पहाड़ बेबस पड़ा था, अपनी बहन को जाने से रोक पान में असफल होकर।"9

गंगोत्री क्षेत्र में तो प्रकृति सख्त और निडर प्रतीत होती है। एक दम दबंग आदिवासी बाला की तरह थोड़ी तेज मिजाज। यहाँ पर प्रकृति कोमल, मधु और संकोची, एक दम से कांची–सी (पहाड़ी बाला) जान पड़ रही थी। कुछ लज्जाई कुछ शर्मिली सी।"10

तुम्हें नहीं लगता जैसे आकाश में तारें टंगी हों या किसी सुन्दरी के पारदर्शी चुनरी पर सलमे–सितारे टांक दिए गए हों।"11

विशेष शब्द : सत्त्व, संप्रेषित, फेनिल, कांची–सी, छपाक छई, उच्छवसित

संक्षेप :

साहित्य और प्रकृति का परस्पर संबंध अत्याधिक पुराना है। वैदिक काल से ही प्रकृति साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग रही है। प्रकृति–सृष्टि का आधार है और प्रकृति के बिना सृष्टि की कल्पना ही निरर्थक है, यही कारण है कि प्राचीन कवियों ने प्रकृति को साहित्य का अंग बनाया। प्रकृति के माध्यम से काव्य में केवल सौन्दर्य ही उत्पन्न नहीं किया गया, अपितु अन्य अनेक कार्यों का संपादन भी प्रकृति के माध्यम से हुआ है। प्रकृति का आलंबन एवं उद्दीपन रूप में चित्रण तो मुख्य रूप से होता है साथ ही प्रकृति के रहस्यात्मक रूप को भी काव्य में प्रमुख स्थान मिला है, जिसके अन्तर्गत प्रकृति के गूढ़ व अनोखे रहस्यों को उजागर किया जाता है। प्रकृति का मानवीकरण रूप साहित्य में अपना अन्यतम स्थान रखता है। इस रूप में प्रकृति को मानव की भांति व्यवहार करते हुए दर्शाया जाता है। काव्य में पृष्ठभूमि निर्माण में भी प्रकृति वर्णन अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करता है।

मलिक राजकुमार के काव्य में प्रकृति के ये विभिन्न रूप प्रकृति वर्णन के अन्तर्गत दृष्टिगोचर होते हैं। प्रकृति के आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण, रहस्यात्मक, संवेदनात्मक, प्रतीकात्मक एवं वातावरण निर्माण आदि विभिन्न रूप मलिक राजकुमार के साहित्य में मिलते हैं। आपकी कविताओं, कहानियों व उपन्यासों में प्रकृति के विभिन्न दृश्य चित्रित हुए हैं। वहीं इनके यात्रा संस्मरण 'पैरों तले पहाड़' में प्रकृति को अत्यधिक विस्तार प्राप्त हुआ है। इसमें लेखक ने प्रकृति के कोमल एवं कठोर दोनों ही रूपों का खुलकर प्रयोग किया। जहाँ प्रकृति का कोमल रूप मन को लुभाता है, वहीं इसका रौद्र रूप मन को डराने वाला होता है।

निष्कर्ष :

अन्ततः कहा जा सकता है कि मलिक राजकुमार जी प्रकृति प्रेमी है और इनके साहित्य में प्रकृति प्रेम स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. किरण कुमार गुप्त, हिन्दी काव्य में प्रकृति चिंतन, पृ. 8
2. Ilustrated Oxford Dictionary, P. 544
3. मलिक राजकुमार, नदी बहती है, पृ. 32
4. वही,, पृ. 18
5. मलिक राजकुमार, एक लड़की पारुल, पृ. 108
6. वही, संबंधों की नाव, पृ. 30
7. वही, एक और त्रिशंकु, पृ. 48
8. वही, बाइपास, पृ. 32
9. वही, पैरों तले पहाड़, पृ 17
10. मलिक राजकुमार, पैरों तले पहाड़, पृ. 57
11. वही, पृ. 89